डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 5 सितम्बर 2008 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-पाँचवा | सितम्बर-2008 | मासिक पत्रिका

4 शुभ दिवस

5 एक संदेश

13 गुरु कुलमालिक है
(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
मुम्बई

27 प्रेम-विरह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन: 0 99 50 55 66 71 व 0 94 14 4 8 03 03
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन: 099 28 92 53 04
उप सम्पादिका : नंदिनी
सहयोग : रेणु सचदेवा, रोज़ी आनन्द व परमजीत सिंह (78)

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

शुभ दिवस - 11 सितम्बर 2008

पूज्य बाबाजी,

आपके शुभ जन्मदिन 11 सितम्बर 2008 पर आपके अबोध बच्चे आपको लाख-लाख बधाई देते हैं, स्वीकार करें।

आप 11 सितम्बर 1926 को इंसानी जामा धारण करके हम बच्चों के लिए इस जलते-तपते संसार में आए। आपने हमें अथाह प्यार दिया और अपार दया करके हमें हमारे असली घर का पता बताया।

हम जानते हैं कि हमने बहुत गलतियाँ की हैं लेकिन आप बक्शनहार हैं, हमें बख्शें। आप दया के सागर हैं हम पर दया करें। आप हमारी पुकार सुनें, जल्द से जल्द हमें देह रूप में दर्शन दें ताकि हम आपके चरणों में बैठने का लाभ प्राप्त कर सकें।

- आपके बच्चें -

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

एक संदेश

मुंबई

आप प्रेमियों को सतसंग सुनते हुए काफी समय हो गया है। मैंने सतसंगों में आपको बाबा जयमल सिंह जी और स्वामी जी महाराज की कमाई के बारे में बहुत कुछ बताया है। आपने रातों को जाग-जागकर भजन-अभ्यास किया। मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का ज्यादा से ज्यादा मौका मिला है; उन्होंने खुद भी भजन-अभ्यास किया और हर एक को भजन-अभ्यास की तरफ प्रेरित किया।

एक बार कुछ सेवादारों ने महाराज सावन सिंह जी से कहा कि आप हमें भजन किए बिना ही पार कर दें। महाराज जी ने कड़क कर कहा, ''यह गलत बात है। तुम्हारा काम तुमने ही करना है चाहे इस जन्म में करो, चाहे दूसरे जन्म में करो! जहाँ से छोड़ोगे फिर वहीं से शुरू करना पड़ेगा।''

बलूचिस्तानी मस्ताना जी सिकन्दरपुर में महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए गए। महाराज जी के बेटे विचिन्तसिंह ने मस्ताना जी को सेवा करने के लिए कहा। मस्ताना जी ने कहा, ''पहले महाराज जी के दर्शन कर लें, दर्शनों के लिए बलूचिस्तान से आए हैं।'' आपके बेटे ने महाराज जी से शिकायत की कि यह न खुद सेवा करते हैं और न औरों को सेवा करने देते हैं, भजन ही करते रहते हैं। महाराज जी ने कहा, ''मैं तो कहता हूँ कि तू भी सेवा न कर; भजन कर। मेरा मिशन तो भजन-अभ्यास करना ही है।''

बाबा बिशनदास जी कुँए के मेंढ़क नहीं थे। वह खुले दिल के महात्मा थे, ब्रह्म में पहुँचे हुए थे। उन्होंने मुझसे कहा, "बेटा रास्ता ऊपर है तलाश जारी रखो।'' जब मुझे महाराज सावन सिंह जी के बारे

में पता लगा तब मैं बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन के पास लेकर गया। उस समय बाबा बिशनदास जी काफी बुजुर्ग हो चुके थे।

महाराज सावन सिंह जी ने बाबा बिशनदास जी से कहा, "आप बहुत बुजुर्ग हो चुके हैं, अब आपके पास ज्यादा समय नहीं है। मैं आपको ऊपर के मण्डलों से ही ले जाऊँगा यह मेरा वायदा है।" बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी को मेरे बारे में बताया कि हमारे इस सेवक ने बहुत जप-तप और धूनियाँ इत्यादि तपाई हैं। उस समय महाराज सावन सिंह जी ने बाबा सोमनाथ को बुलाया और कहा कि हमारे इस सेवक ने भी इसी तरह के बहुत कर्म-काण्ड किए हैं।

महाराज कृपाल सिंह जी ने रावी नदी के पानी में खड़े होकर अभ्यास किया। मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था मैंने अठारह साल जमीन के अंदर बैठकर 'दो-शब्द' का अभ्यास किया। मैंने अपनी जिन्दगी का बहुत सा हिस्सा जमीन के अंदर बैठकर अभ्यास में बिताया है। मेरा जातिय तर्जुबा है कि सन्तमत के पहले अभ्यास कठिन होते हैं लेकिन जब रास्ता चल पड़ता है फिर उतने कठिन नहीं होते, आसान हो जाते हैं। बिना मेहनत के इस दुनिया से किसी को कुछ नहीं मिलता तो क्या रूहानियत में बिना कमाई के कुछ मिलेगा?

जो लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के शिकार होते हैं लेकिन अंदर परमात्मा से मिलना चाहते हैं वे कामयाब नहीं हो सकते। ऐसा करके हम परमात्मा के साथ मज़ाक कर रहे हैं।

परमपिता कृपाल ने हमें डायरी रखने के लिए कहा। आपका मकसद यह नहीं था कि शाम को डायरी भरकर अगले दिन वही गलती करें जो कल की थी। जिन्दगी की एक गलती ही काफी होती है। दूसरी बार गलती नहीं होनी चाहिए क्योंकि एक गलती ही सारी जिन्दगी को पलटकर रख देती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

आगे पाछे बहु पछताऊँ, समय पड़े पर होवत चोरा।

हम बातों से परमात्मा को पाना चाहते हैं। मुझे ऐसे नामलेवा मिलते हैं जिनको 'नाम' लिए हुए चालीस साल हो गए हैं लेकिन बातों के सिवाय उनके पल्ले कुछ नहीं। हमें सन्तमत में यही समझाया जाता है कि भजन के चोर न बनें मेहनत करें अंदर जाएं और सच्चाई को अपनी आँखों से देखें। सतगुरु समुद्र है। इसमें गोता लगाना सेवक का पहला धर्म है। हम भजन के चोर हैं इसलिए हमारा मन हमें धोखा देता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जो - जो चोर भजन के प्राणी से - से दुख सहे।
आलस नींद सतावे उनको नित-नित भ्रम गहे।
काम क्रोध के धक्के खावे लोभ नदी में डूब मरे।

जो लोग भजन नहीं करते उनका मन उन्हें भ्रम में डाल देता है और काम, क्रोध में फँसा देता है। कई बार लोग हमारे ऊपर हँसते भी हैं कि यह सतसंग में भी जाता है और बुरा कर्म भी नहीं छोड़ता।

माड़ा कुत्ता खसमे गाली।

राजस्थान के लोग नामलेवा की उदाहरण देते थे कि यह ब्यास जाता है महाराज सावन सिंह जी का शिष्य है झूठ नहीं बोलता। अदालत भी उसे सच मान लेती थी। इसी तरह गुरु गोविंद सिंह जी के शिष्यों के बारे में कहावत थी कि इनके शिष्य कभी झूठ नहीं बोलते।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर सतसंग में सिक्खों के काफिले की कहानी सुनाया करते थे कि फरूख्सियर बादशाह ने कसम उठा ली थी कि मैं सिक्खों का नामोंनिशान नहीं छोडूँगा। उस समय सिक्ख विपता के मारे जंगलों में रह रहे थे। सिक्खों का एक काफिला पकड़ा गया, जिसमें एक बच्चा भी था। उस बच्चे की माँ की पहुँच वजीर की रानी तक थी। उसने सोचा कि बच्चे को छुड़वाया जाए! उसने वजीर की रानी के पास जाकर कहा कि मेरा बच्चा मासूम है उसे छोड़ दें।

रानी ने वजीर से कहा और वजीर ने बादशाह से कहा। बादशाह ने कहा, ''मैं बच्चे को इस शर्त पर छोड़ दूँगा अगर बच्चा यह कह दे कि

मैं सिक्ख नहीं हूँ।'' बच्चे की माँ खुश हुई कि यह कौन सी बड़ी बात है? बच्चा यह कह देगा। अगले दिन सुबह माँ ने बच्चे के पास जाकर कहा, ''बेटा! मैंने तेरी सिफारिश कर दी है। वे जब तुझसे पूछे तो तूने सिर्फ इतना ही कहना है कि मैं सिक्ख नहीं हूँ।'' बच्चे ने कहा, ''यह गलत बात है। मैं सिक्ख हूँ, मैं सिक्ख हूँ।'' बच्चे ने जल्लाद से कहा कि आओ! पहले मुझे कत्ल करो ताकि मेरी माँ को ज्यादा देर इंतजार न करना पड़े, इसे और तकलीफ न उठानी पड़े।

गुरु नानकदेव जी कुलमालिक थे। आपने कठिन कमाई की। सन्त-महात्मा दुनिया को डेमोन्सट्रेशन देने के लिए कमाई करते हैं ताकि हम लोगों को ज्ञान हो जाए कि बिना तकलीफ, बिना मेहनत कुछ भी नहीं मिलता। हम कहते हैं कि अन्त समय में गुरु आए और हम कुछ न करें। हमारा यह ख्याल गलत है; क्या गुरु ने हमसे कर्ज लिया है कि वह आए और हम कुछ न करें?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सेवकों की भी कुछ डयूटी होती है उनका धर्म है कि वे अपना काम करें। गुरु अपनी डयूटी से कभी पीछे नहीं हटता।'' मैं एक सतसंगी लाभ सिंह की मिसाल दिया करता हूँ वह 'नाम' लेकर भी शराब पिया करता था। उसके पेट में रसौली थी। अन्त समय में उसका ऑपरेशन हुआ। उसने बताया कि महाराज सावन सिंह जी आए हैं लेकिन मेरी तरफ उनकी पीठ है। कबीर ने लोई की तरफ थोड़ी देर पीठ की थी तब लोई ने कहाः

करवत भला न करवट तेरी, लाग गले सुन बेनती मेरी।
हौं वारी मुख फेर प्यारे, करवट दे मोहे काहे को मारे।

अगर गुरु सेवक की तरफ पीठ करके खड़ा हो जाए! सेवक के पल्ले क्या रह जाता है? मैंने और भी कई वाक्यात देखे हैं अंत समय में सेवक को परेशान होना पड़ता है।

मैं इतने दिनों से आपको कमाई की तरफ प्रेरित कर रहा हूँ कि आप लोग कमाई करें अपने मन को खाली न छोड़े अगर हम मन को तीसरे तिल से उतरने की इज़ाजत दे देते हैं तो यह नीचे भटकता है। उस समय हम अपनी शक्ति को नष्ट कर रहे होते हैं क्योंकि हमारे घर का दरवाजा तीसरा तिल है। सतसंगी का ख्याल हमेशा तीसरे तिल पर एकाग्र होना चाहिए। हर रोज अभ्यास करें। अभ्यास को बोझ न समझें, प्रेम प्यार से करें; अगर हम एक दिन अभ्यास मुलतवी करते हैं तो कई दिन ज्यादा समय देकर भी हम उसे पूरा नहीं कर सकते।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हजार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठ जाएं। जब तक आप आत्मा को खुराक नहीं दे देते शरीर को खुराक़ न दें। हमारी आत्मा भी कई जन्मों से भूखी है। हम सोचते हैं अगर हमने अन्न नहीं खाया तो हमारा शरीर काम नहीं कर सकेगा क्या कभी आत्मा की तरफ भी ध्यान दिया कि यह कितने जन्मों से कमजोर है?''

मैं सतसंग में जो कुछ रोज़ बताता रहा हूँ आप लोगों ने उस पर अमल करना है। सन्त-महात्मा सतसंग, नाम, गुरु से प्यार और गुरु पर भरोसा करने पर जोर देते हैं अगर हमें गुरु पर भरोसा न हो तो हमारा रास्ता खुल ही नहीं सकता। परमात्मा हमारे अंदर 'शब्द-रूप' होकर बैठा है हम उसे धोखा नहीं दे सकते, उसे बातों से खुश नहीं कर सकते। हमारी आदत है कि इधर-उधर की बातें सुनकर हम लेकचरार बन जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

साखी लाया बनाएके इत उत अक्षर काट।
कहे कबीर कब लग जिए झूठी पत्तल चाट।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम लोगों की कमाईयों का जिक्र करते हैं लेकिन खुद कमाई नहीं करते। लोगों की शादियों के गीत गाते हैं खुद अपनी शादी नहीं करवाते। हमें मेहनत करनी चाहिए मेहनत के चोर नहीं बनना चाहिए।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।

भजन करना किसी पर एहसान करना नहीं होता भजन करके हम अपने ऊपर दया कर रहे होते हैं। अपने ख्यालों को कंट्रोल करके ही हम भजन-अभ्यास में कामयाब होते हैं अगर हमने भजन-सिमरन करना है तो हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से भी बचना होगा, इनकी स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। जब तक हमारा मन त्रिकुटी अपने घर ब्रह्म में नहीं पहुँच जाता, तब तक आत्मा इसके पंजे से आजाद होकर पारब्रह्म में नहीं पहुँचती और हम इन बीमारियों से छुटकारा नहीं पा सकते।

मेरे पास कई लोग आकर कसमें खाकर कहते हैं, ''बाबाजी! हम आगे से ऐसा काम नहीं करेंगे।'' लेकिन वे लोग अपनी आदतें नहीं छोड़ सकते। जब तक घर का मालिक मजबूत नहीं हो जाता तब तक ये अंदर से नहीं निकलते जब घर का मालिक जाग जाता है तो ये निकल जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

मुसाफिर जागते रहना नगर में चोर आते हैं।
जरा सी नींद गफलत में झटपट गठरी उठाते हैं।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारी देह(नगर) के चोर हैं। ये सोए हुओं को उठाकर अपना काम करवाकर चले जाते हैं जीव के पल्ले पछतावा रह जाता है कि मैंने यह बुराई क्यों की? जाते हुए बता भी जाते हैं कि तू गलत है।

आप सब प्रेमियों ने कमाई करनी है। आपस में प्यार बनाकर रखना है। कई लोग आकर मुझसे पूछते हैं, ''हमें 'नाम' लिए हुए बीस साल हो गए हैं, तीस साल हो गए हैं क्या पर्दा खुलने का कोई ख़ास समय होता है?'' मैं कहा करता हूँ कि प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को अग्नि के नजदीक कर दें लेकिन हम गीले बारूद हैं। यह कोई सरकारी नौकरी नहीं। प्रेमी आता है अपना काम बनाकर आगे चला जाता है बाकी हम सोचते रह जाते हैं।

सतगुरु जीव पर दया करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। सतगुरु जीव पर दया करते समय आलस नहीं करते, समय नहीं देखते, आँधी बारिश से नहीं डरते। मैं बताया करता हूँ चाहे दरवाजा बंद हो! आँधी-तूफान चल रहा हो! चाहे आप खारे समुद्र में बैठे हो! प्रेम से गुरु को याद करोगे तो वह जरूर आएगा। आपका प्रेम उसे खींचकर ले आएगा।

जिन प्रेमियों ने भी इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया है, अपना कीमती समय लगाया है हम सबके धन्यवादी हैं। जिन प्रेमियों ने अपने गुरु बाबा सोमनाथ के भण्डारे के रूप में सेवा की है हम उनके भी धन्यवादी हैं। शिष्य का फर्ज है कि अपने गुरुदेव की याद मनाए। हमेशा अपने अंदर गुरुदेव के लिए जगह रखे। मैं आशा करता हूँ कि आप लोग इस उत्साह को भंग नहीं करेंगे, भजन-सिमरन करेंगे।

------- ❀❀❀ -------

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु कुलमालिक है

मुंबई

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

संत जनो मिल भाईहो सच्चा नाम समाल।
तोसा बंधो जीअ का ऐथै ओथै नाल।।

यह बानी गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की है। आपके दिल में बचपन से ही परमात्मा का प्यार और इश्क था। आप कहते हैं कि दुनिया की तरह हमने भी बाहरी रीति-रिवाज़ जैसे जप-तप, पूजा-पाठ सब कुछ ही किया; तीर्थों पर भी गए लेकिन परमात्मा नहीं मिला।

पाठ पढ़यो और वेद विचारयो निवल भुयंगम साधे।
पंच जना स्यों संग न छुटके अधक ए बुध बाधे।
प्यारे इन विध मिलन न जाई मैं किए कर्म अनेका।
हार परे स्वामी के द्वारे दीजे बुद्धि विवेका।
मौन रहयो करपाती रहयो नग्न फिरयो वन माहीं।
तट तीर्थ सब धरती भरमयों दुविधा छुटके नाहीं।।

करपाती - अपने पास बर्तन न रखना हाथ में खाना लेकर आगे चल पड़ना। ये सब कर्म करने से रूह और मन की गाँठ न खुली, मन में अहंकार आ गया, दुविधा में पड़ गए कि मैंने इतने कर्म किए हैं। जब गुरुमुखों के द्वारे पर गए उन्होंने हमें विवेक बुद्धि दी जिससे हम सच और झूठ का निर्णय कर सके फिर हमें पता लगा कि हमें जिस परमात्मा की खोज है वह बाहर नहीं, हमारे अंदर है।

भाग होया गुरु सन्त मिलाया, प्रभ अविनाशी घर में पाया।

जब हमारा भाग्य उदय हुआ, गुरु रामदास जी ने दया की तो अविनाशी, आदि-जुगादि से चला आ रहा प्रभु हमने अपने घर में ही पा लिया। भजन-अभ्यास किया अब प्रभु सोते-जागते हमारे साथ है।

सेव करी पल चसा न विछड़े जन नानक दास तुम्हारे जियो।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जहाँ सच्चाई है वहाँ विरोधता जरूर होती है। चोर हमेशा धन पर नजर रखते हैं।'' आपने जब मुझे काम करने का हुक्म दिया तब मैंने आपके आगे अपनी कई कमजोरियाँ रखी कि मैं इस काम के काबिल नहीं हूँ। आपने कहा, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे? दोनों का अपना-अपना काम होता है, दोनों ही मालिक की तरफ से आए होते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी एक कहानी सुनाया करते थे, ''एक बिच्छु दरिया में डूब रहा था। महात्मा को तरस आया कि इस बिच्छु को पानी से बाहर निकालकर इसकी जान बचाई जाए। महात्मा ने बिच्छु को बाहर निकाला वह डंक मारकर पानी में चला गया। महात्मा ने फिर उसे पानी से बाहर निकाला लेकिन वह फिर डंक मारकर पानी में चला गया। किसी ने महात्मा से कहा आप जानते हैं कि यह जहरीला जानवर है, इसका काम डंक मारना है। महात्मा ने कहा अपनी-अपनी आदत है। जब यह अपनी आदत नहीं छोड़ता तो हम अपनी आदत क्यों छोड़े?''

सन्तों को हम सांसारिक जीवों के मन का अच्छी तरह ज्ञान होता है कि हम कितनी उलझन में रहते हैं। उन्हें परमात्मा की तरफ से हुक्म होता है कि आप जीवों को समझाकर मेरे पास लाएं। सन्त-महात्माओं को कितने भी कष्ट मिलें वे परमात्मा का संदेश जीवों तक पहुँचाते हैं।

हम गुरु अर्जुनदेव जी की हिस्ट्री में पढ़ते हैं कि आपके परिवारवालों ने आपको बहुत कष्ट दिए। आपके भाई ने उस समय की हुकूमत के साथ मिलकर आपको बहुत कष्ट दिलवाए। आपको गर्म तवे पर बिठाया गया, आपके सिर पर गर्म रेत डाला गया और उबलते हुए पानी में बिठाया गया। अपने लालच की खातिर ही हम एक-दूसरे की जान के प्यासे हो जाते हैं, सच्चाई से आँखें बंद करके बैठ जाते हैं बेशक हमारे सामने सूरज क्यों न चढ़ा हो?

सूरज तो चढ़ता है अगर उल्लू सूरज को ना देखें! इसमें सूरज का क्या कसूर है? महात्मा चतुरदास जी कहते हैं:

इक दिन सभा उल्लुआँ लाई बैठे मिल नर नारी जी।
कोई आखे सूरज नाहीं कौन करे उजयारी जी।
वारो वारी सभे बोले कर कर सोच विचारी जी।
ओना विच इक वड्डा उल्लू बानी ओस उचारी जी।
अज तक सूरज हम नहीं डिट्ठा वड्डी उमर हमारी जी।
ईक हंस टीसी पे बैठा बाणी ओस उचारी जी।
है प्रभात देख लो सारे लखां किरण पसारी जी।
चमगादड़ घुघु आए बैठे किया न्यायो संभारी जी।
उल्लु सब टें टें कर हँसे हंस मौन तब धारी जी।
चतुरदास ऐह अजब अदालत तीन लोक से न्यारी जी।।

जो कमाई नहीं करते मन के मुरीद हैं उन्हें मनमुख कहकर ब्यान किया गया है। एक बार उल्लुओं ने सभा लगाई उनमें जो सबसे बड़ा उल्लु था उसने कहा अगर सूरज होता तो मैंने ना देखा होता? वहाँ पर एक हंस भी बैठा था उसने कहा कि आप आँखे खोलकर देखें! प्रभात हो चुकी है जमीन पर सूरज की लाखों किरणें पड़ रही हैं। हंस की बात सुनकर सब उल्लु, चमगादड़ उस पर हँसने लगे तो हंस ने मौन धारण कर लिया।

मैं बताया करता हूँ कि ज्यादा पढ़े-लिखे लोग बाल की खाल उतारने में लगे रहते हैं कमाई नहीं करते अंदर नहीं जाते सच्चाई नहीं देखते इसलिए गलती कर जाते हैं। वे कहते हैं कि हमने इतनी किताबें पढ़ी हैं लाईब्रेरियां खाली कर दी हैं अगर परमात्मा होता तो क्या हमें न मिलता? स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कोई मेली नजर न आया, अब कासे कहूं भाई।

जो सन्तों के साथ अंदर जाएगा वही कह सकता है कि सच्चाई हमारे अंदर है लेकिन हमने उन्हें गवाह बनाया हुआ है जो कभी खुद अंदर नहीं गए। वे यही कहेंगे कि हमें इतना समय हो गया है अगर परमात्मा होता तो हम न देख लेते? गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम खुद अन्धे हैं और अन्धों से ही न्याय करवाना चाहते हैं।'' सन्त-महात्माओं

की आँख बनी हुई होती है और वे हमारी आँख बनाने के लिए ही संसार में आते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

निर्धन सोई जाके हृदय नाम ना होई।

जब मौत आती है उस समय हमारा कमाया हुआ धन-दौलत हमारे साथ नहीं जाता। यह धन-दौलत बैंको में ही पड़ा रह जाता है या बच्चे उसके वारिस बन जाते हैं अगर हुकूमत हमारे पल्ले है तो वह भी यहीं रह जाती है। यहाँ तक की हमारा शरीर भी हमारे साथ नहीं जाता। कबीर साहब कहते हैं:

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रोंधे मोहे।
इक दिन ऐसा आएगा मैं रोंधूँगी तोहे।

कुम्हार मिट्टी के बर्तन बना रहा था तो मिट्टी ने कुम्हार से कहा क्या तूने कभी वह समय भी आँखों के सामने रखा है जिस दिन मैं तुझे इसी तरह अपने अंदर समा लूंगी। महात्मा हमें हमेशा याद दिलाते हैं कि हमारे साथ क्या जाएगा? अपनी जिन्दगी में किसी ऐसे मालिक के प्यारे के पास जाएं जो आपकी जिन्दगी का बीमा कर दे। 'नाम' ही जिन्दगी का बीमा है। 'नाम' ने ही हमारे साथ जाना है, 'नाम' ही हमारी जिन्दगी का तोशा है। आत्मा को भी खुराक की जरूरत है यह भी जन्मों-जन्मों से भूखी है। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा गागर जल भरी आज काल जाए है फूट।
गुर जिन चेतया आपणा से आध मांझ लीजेंगे लूट।

यह देह एक कच्ची गागर है अगर इसे बीमारी या ऐक्सीडेंट की थोड़ी सी भी ठोकर लग जाए तो यह फूट जाती है। हमें 'नाम' मिला हुआ है तो गुरु हमारी आत्मा को लेने आएगा अगर 'नाम' नहीं मिला तो यमदूत आएंगे। यमदूत इसे पीटते हैं, डंडे मारते हैं। सिर पर पापों का बोझ होता है। आगे चलकर पहाड़ की चढ़ाई है जो इससे चढ़ी नहीं जाती वहाँ इसे प्यास लगती है और यह पानी माँगती है। यम इससे कहते हैं, ''तुम हमें अपना फलाना पुण्य दो तो हम तुम्हें पानी दे

देंगे।'' वहाँ कीमत देने पर ही पानी मिलता है। धर्मराज के पास पहुँचने से पहले ही यम इसकी सारी पूँजी रास्ते में ही लूट लेते हैं।

एक समय था जब राजस्थान में पानी का टीन एक रूपये में मिलता था। लोग पीने के लिए बीस-बीस कोस से पानी लाते थे। गुरु साहब जिस रास्ते का जिक्र कर रहे हैं उसका जिक्र सब सन्तों ने किया है कि वहाँ बहुत प्यास लगती है। जैसे यहाँ कोई ठग्गी, चोरी या कत्ल करता है तो पुलिस वाले उसे अदालत में पेश करने से पहले उसका सारा सामान ले लेते हैं। पुलिस के चलान के मुताबिक अदालत उसे सजा दे देती है। इसी तरह धर्मराज के दूत डंडे मारकर आत्मा से सब कुछ लूट लेते हैं। वहाँ कौन इसका मददगार है?

मक्का में काजी रूकमदीन ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''आप मुर्शिद की इतनी तारीफ करते हैं कि मुर्शिद के बिना जीव पार हो ही नहीं सकता मुर्शिद जीव की कहाँ मदद करता है?'' आप कहते हैंः

बे-पीरा बे-मुर्शिदा कोई न पूछे बात।

वहाँ पस और खून की नदी बहती है। मलीन आत्मा को उस नदी में गोते दिए जाते हैं अगर आत्मा का कोई गुरु-पीर है तो वह उसे पार ले जाता है नहीं तो आत्मा दुखी होती है। 'नाम' वहाँ मल्लाह का काम करता है जहाज गुरु का होता है। **गुरु कुलमालिक है** गुरु 'नाम' का जहाज लेकर इस संसार मण्डल में आकर होका देता हैः

सन्तों सुनो सुनो जन भाई गुरु काडे बाँह कुकीजे।
जे आत्म को सुख नित लोड़ो ते सतगुरु शरण पहीजे।

सन्त संसार में आकर सतसंग के जरिए होका लगाते हैं कि जिन्होंने पार जाना है वे 'नाम' के बेड़े में सवार हो जाएं! हम जानते हैं कि मल्लाह रोज नदी को पार करता है वह नदी की लहरों और घूमन-घेरियों से वाकिफ होता है। गुरु रोज परमात्मा के देश जाता है, उसकी परमात्मा के साथ लिव लगी हुई है। जब हम गुरु को साथ लेकर चलते

हैं तो वह हमें हर जगह से बचाकर ले जाता है। गुरु बताता है कि बेटा! किस रास्ते से जाना है। आप कहते हैं:

बिन नामे को संग न साथी मुक्ते नाम ध्यामणया।

आप हमें प्यार से समझाते हैं कि 'नाम' के बिना हमारा कोई संगी साथी नहीं। 'नाम' की दौलत साधु-सन्तों मालिक के प्यारों से ही मिलती है। 'नाम' का तोशा इकट्ठा करें क्योंकि 'नाम' हमारी यहाँ भी रक्षा करता है और आगे भी 'नाम' ने ही हमारी रक्षा करनी है। 'नाम' से हमारे मन को शान्ति आती है।

गुरु पूरे ते पाईऐ अपनी नदर निहाल।।

शिष्य गुरु से ज्यादा तरक्की नहीं कर सकता। हमें कदम-कदम पर गुरु की जरूरत पड़ती है। गुरु अपनी दया दृष्टि से ही 'नाम' को हमारे अंदर प्रकट करता है। हमारी हिम्मत और गुरु की दया बराबर काम करती है अगर सेवक हिम्मत न करे तो गुरु कैसे दया कर सकता है? **गुरु कुलमालिक है** हमें यह पूँजी पूरे गुरु से मिलती है।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि कुछ महात्मा मुर्गी की मिसाल होते हैं जैसे मुर्गी अण्डों पर बैठकर अण्डों को गर्मी देकर बच्चे निकालती है। कुछ महात्मा कच्छु की मिसाल होते हैं जैसे कच्छु खुष्की में अपने अंडे दे आता है और खुद पानी में रहता है। वह अपने ध्यान से जहाँ तक उसकी रेंज है वहाँ तक अपने बच्चों की परवरिश करता है अगर वह अपना ध्यान अण्डों से उठा ले तो उसके अण्डे खराब हो जाते हैं। आला दर्जे के महात्मा कूँज की मिसाल होते हैं जैसे कूँज सर्दी में पहाड़ों पर अपने अण्डे दे आती है और सिमरन के जरिए अण्डों की परवरिश करती है। ऐसे महात्मा के लिए शिष्य के दूर या नज़दीक होने का कोई फर्क नहीं पड़ता। चाहे उनके शिष्य सात समुद्र पार बैठे हों चाहे उनके नज़दीक रहते हों। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बसे बनारसी सिक्ख समुद्र तीर एक पल बिछड़े नाहीं जे गुण होवे शरीर।

अगर हमने गुरु को प्रकट कर लिया हो तो गुरु एक पल भी हमसे नहीं बिछड़ता। शिष्य 'शब्द' को आत्मा के ऊपर सवार करके आँखें बंद करके जहाँ मर्जी आ जा सकता है उसे कोई रोक-टोक नहीं। हमें रोज़-रोज़ अभ्यास करके सतगुरु की दया प्राप्त करनी चाहिए।

गुरु मुख आए जाए निसंग।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''गुरु के सेवक चाहे कितनी भी दूर हों गुरु अपनी दृष्टि सेवकों पर डालता है। गुरु 'शब्द-रूप' होकर हर सुबह सेवकों की संभाल करते हैं। जो सेवक जाग रहे होते हैं वे दया प्राप्त कर लेते हैं। जो नींद के दोस्त बनकर सो रहे होते हैं गुरु उनके पास खड़े होकर चुपचाप वापिस आ जाते हैं।'' फरीद साहब कहते हैं:

रात कस्तूरी वंडया सुतेया मिले न भाव।
जिन्हा नैन निन्द्रावले तिन्हा मिलन कवाओ।
पहले राते फुल्लड़ा फल की पीछे रात।
जो जागणगे सो लैंणगे सतगुरु कोलो दात।

रात को कस्तूरी बाँटी जाती है। जो सेवक सोए होते हैं उन्हें कस्तूरी किसी भी कीमत पर नहीं मिलती। पहली रात का भजन करना फूल के समान है। पिछली रात को जागकर भजन करना फूल के अंदर बीज के समान है; जो रात को जागेंगे वे ही सतगुरु से दात लेंगे।

गुरु कुलमालिक है वह जानता है कि कौन मेरी याद में बैठा है! वह वहाँ जरूर पहुँचता है। बेशक हमारा कमरा बंद हो! रात का समय हो! आँधी-तूफान चल रहा हो! बारिश हो रही हो और कितनी भी खतरनाक जगह क्यों न हो आप अपने गुरु को श्रद्धा और प्यार से याद करें गुरु हाजिर होगा क्योंकि गुरु हमारी श्रद्धा और प्यार का भूखा है।

करम परापत तिस होवै जिस नों होय दयाल।।

आप कहते हैं, ''गुरु ने सबको ले जाना है क्योंकि वह दया का समुद्र है लेकिन वही बहादुर है जो जीते जी गुरु को अपने अंदर प्रकट

कर ले और लोगों को सच्चाई बता सके कि सच्चाई यह है।'' कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बतावे साध को साध कहे गुरु पूज।

वही साधु है जो दसवें द्वार में पहुँच जाए। उसे पता लग जाता है कि अंदर कौन-कौन सी शक्तियाँ मेरे गुरुदेव के आगे झुकती हैं। ऊपर के मण्डलों में मेरे गुरु की क्या इज्जत है। फिर वे दूसरे सेवकों को अपना तजुर्बा बताते हैं कि **गुरु कुलमालिक है**।

अर्स पर्स के मेल से पई अगम की सूझ।

अगर हम सन्त-महात्माओं की संगत-सोहबत में जाते हैं तो हमारे दिल में भी शौंक और विरह पैदा होती है। हम सोचते हैं! यह भी हमारा ही भाई है; हम भी कमाई करें हमारे लिए भी दरवाजा खुल सकता है। जैसे खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ लेता है। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं उन्हें ही यह वस्तु प्राप्त होती है।

मेरे मन गुर जेवड अवर न कोय ।।

आप प्यार से समझाते हैं, ''**गुरु कुलमालिक है**। वह दोनों जहान का वाली है। पवन और पानी सब उसके हुक्म में हैं लेकिन वह कोई करामात नहीं दिखाता।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल ने सतपुरुष से वर लिए हुए हैं कि जीव को यह पता न चले कि मैं यहाँ जो सुख भोग रहा हूँ ये मेरे किस कर्म का इनाम है और जो दुख या बीमारी भोग रहा हूँ ये मेरे किस कर्म की सजा है? जीव को पिछले जन्म का ज्ञान न हो। मैं जिसे जहाँ जन्म दूँ वह वहाँ खुश रहे और जब सन्त संसार मंडल पर आएं वे कोई करामात न दिखाएं।''

महाराज सावन सिंह जी यह भी कहा करते थे कि सन्त के लिए किसी अन्धे को आँख दे देना, किसी की टाँग ठीक कर देना, कोढ़ी का कोढ़ दूर कर देना कोई मुश्किल नहीं। सन्तों के पास ऐसे अनेकों

वाक्यात होते रहते हैं अगर सन्त किसी को आँख दे दें तो सारा इलाका ही 'नाम' लेने के लिए तैयार हो जाएगा लेकिन सन्त ऐसा नहीं करते। सन्त साधारण जिन्दगी व्यतीत करते हैं। जब उनके सेवक उन्हें बताते हैं कि महाराज जी! आपने हमारा यह काम किया है लेकिन वे कहते हैं, ''यह तो गुरुदेव की महिमा है।''

मुझसे मिलने से काफी साल पहले परम पिता कृपाल मेरे अंदर स्वामी जी के रूप में आते रहे। आप जब मुझे मिले तो मैंने आपको बताया कि आपकी लभे कटी हुई थी आपके सिर पर टोपी थी। कुछ दिन पहले ही आपका यह स्वरूप मेरे अंदर आने लगा। महाराज जी ने कहा, ''हाँ भई! यह सब हुजूर महाराज की महिमा है।''

किसी प्रेमी ने महाराज सावन सिंह जी के पास आकर कहा कि जब हमारे बुजुर्ग ने शरीर छोड़ा आपने उसकी संभाल की। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''यह कौन सी बड़ी बात है। बाबा जयमल सिंह जी सबकी संभाल करते हैं।'' उस समय बलूचिस्तानी मस्ताना जी वहाँ बैठे थे। मस्ताना जी ने हड्डियों की बोरियाँ आपके सामने रखकर कहा, ''सीमाप्रान्त में हैजा फैला हुआ था। जिन प्रेमियों ने शरीर छोड़ते हुए यह कहा कि सावन शाह आए हैं हम जा रहे हैं ये उन प्रेमियों की हड्डियाँ हैं। आपने इनकी संभाल की है।'' महाराज सावन सिंह जी ने हँसकर कहा, ''मस्तानेया! तू बहादुर है।''

सतगुरु कभी यह नहीं कहते कि मैंने तेरा यह काम किया है। वे अपने अंदर नम्रता, आजजी रखते हैं। **गुरु कुलमालिक है।**

शिवजी के दो बच्चे श्याम कार्तिक और गणेश थे। शिवजी ने सोचा! मेरे पीछे ये गद्दी के लिए झगड़ा न करें, मैं इनका निबटारा कर जाऊँ। शिवजी ने दोनों से कहा, ''जो धरती की परिक्रमा करके पहले वापिस आएगा मैं उसे अपनी गद्दी दे दूँगा।'' श्याम कार्तिक की सवारी हंस और गणेश की सवारी चूहा थी। श्याम कार्तिक को घमंड था कि यह मेरा मुकाबला कैसे कर सकता है? गणेश, शिवजी के अंदर के राज़ के

वाकिफ थे। उसने शिवजी को कुलमालिक समझकर उनकी परिक्रमा करके माथा टेक दिया। श्याम कार्तिक हंस पर बैठकर धरती की परिक्रमा करने जहाँ भी गया उसे आगे गणेश ही दिखाई दिया। आज हम जानते हैं कि श्याम कार्तिक के मन्दिर कहीं-कहीं हैं दुनिया में इसकी पूजा नहीं होती। गणेश के जगह-जगह मन्दिर हैं उनकी पूजा होती है क्योंकि गणेश जी ने श्रद्धा-भरोसे के साथ शिवजी के कहे मुताबिक कमाई की।

गुरु कुलमालिक है संसार में गुरु से बड़ा कोई नहीं। गुरु चाहे तो बादलों से बारिश करवाए अगर न चाहे तो बादलों को खाली वापिस भेज दे लेकिन हम मनमुखों को ऐतबार नहीं आता। हम सोचते हैं! यह सब एक इन्सान के बस में कैसे हो सकता है? जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे बताते हैं कि गुरु और परमात्मा में कोई भेद नहीं।

हमरो भर्ता बड़ो विवेकी आपे सन्त कहावे।

परमात्मा सन्त बनकर संसार में आता है। परमात्मा जब भी हमें रोशनी देता है किसी महात्मा का तन धारण करके हमारे सामने आकर बैठ जाता है और हमें समझाता है कि ऐसा करने से आपका फायदा हो सकता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

साध रूप अपना तन धारेया।

गुरु हमें सतसंग के और 'नाम' प्राप्त करने के फायदे बताता है। इस संसार मंडल पर गुरु की तुलना नहीं की जा सकती।

दूजा थाओं न को सुझै गुर मेले सच सोय।।

आप कहते हैं, ''हम किसी का उदाहरण नहीं दे सकते जो गुरु के बराबर है। गुरु परमात्मा का कौन शरीक हो सकता है? गुरु को ही नमस्कार करनी चाहिए। **गुरु कुलमालिक है** वह खुद ही दया करके जीवों को अपने साथ मिलाता है।''

सगल पदारथ तिस मिले जिन गुर डिट्ठा जाय।।

आप कहते हैं, ''आप अपने अंदर गुरु को प्रकट कर लें आपको सब कुछ ही मिल जाएगा किसी पदार्थ के पीछे भागने की जरूरत नहीं। आपको दुनिया से आशा नहीं रखनी चाहिए, आपकी आशा गुरु पर होनी चाहिए। गुरु जानता है कि हमें किस चीज़ की जरूरत है वह अपने आप ही पूरी करेगा। वह हमारी जरूरत चाहे किसी इंसान में बैठकर पूरी करे, चाहे छत के ऊपर से छेद करके फैंके यह गुरु का काम है।''

सतगुरु दाता सबना वत्थू का पूरे भाग मिलावणया।

मेरे पास पश्चिम के अनेकों प्रेमी आकर पूछते हैं कि महाराज जी! लंगर की कोई सेवा बताएं। मैं उनसे हँसकर कह देता हूँ, ''अभी तो लंगर परम पिता कृपाल का चल रहा है। जिस दिन अजायब का लंगर चलेगा आप जो मर्जी सेवा डाल देना।''

सोचकर देखें! हम दावे तो बहुत बड़े-बड़े करते हैं लेकिन अपना पेट नहीं पाल सकते। पूरा गुरु कभी इश्तिहार नहीं बाँटता कि आप लोग दान दें तभी लंगर चलेगा या जन्मदिन मनाने के लिए कुछ लाएं। जिन लोगों ने गुरु को प्रकट किया होता है वे दुनिया के दास नहीं बनते परमात्मा के दास होते हैं। मैं अपने सेवकों को बताया करता हूँ कि शाम को बर्तन धोकर रख दें। यह परम पिता कृपाल का वाक है वह अपने आप ही भर देगा चाहे वह किसी इंसान के जरिए भरे।

गुरु कुलमालिक है, गुरु ताकत है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे जब आप गुरु को प्रकट कर लेंगे तो क्या वह आपको रोजी-रोटी नहीं देगा? बुल्लेशाह कहते हैं:

ओह प्रभ साड्डा सखी है असी सेवा कनियों सूम।

आप कहते हैं कि हम भजन करने के चोर हैं। वह देने वाला तो सखी है। वह त्रिलोकी का मालिक है। सारे पदार्थ उसके चरणों में हाथ जोड़कर कहते हैं कि हमें इस्तेमाल करें।

महाराज कृपाल एक मिसाल दिया करते थे कि माया स्त्री के रूप में भगवान के पास गई उस समय इसके पीछे के बाल खिंचे हुए थे

और आगे से माथा घिसा हुआ था। भगवान ने माया से पूछा, "तेरा यह हाल कैसे हुआ?" माया ने कहा, "संसारी लोग मुझे पीछे से खींचते हैं मैं उनसे पीछा छुड़ाकर भाग आती हूँ। सन्तों के दरबार में माथा घिसती हूँ वे मुझे अंगीकार नहीं करते।" सन्तों को दुनिया के किसी भी पदार्थ की कोई कमी नहीं होती।

गुर चरणी जिन मन लगा से वडभागी माय।।

वही भाग्यशाली हैं जिनका ख्याल सोते-जागते, उठते-बैठते अपने गुरु के साथ जुड़ा होता है।

गुर दाता समरथ गुर गुर सभ मह् रहया समाय।।

गुरु कुलमालिक है, समरथ है। गुरु दोनों हाथों से दात लुटाता है। वह शब्द-रूप होकर हर एक के अंदर बैठा है। बेशक कोई उसके पास आए या न आए! हम उसकी क्या महिमा कर सकते हैं?

गुर परमेसर पारब्रहम गुर डुबदा लए तराय।।

गुरु सेवक का परमेश्वर होता है, अंदर जाकर उसी ने मिलना है। वह बाहर तो हमें समझाने के लिए आता है क्योंकि हमने परमात्मा को देखा नहीं होता हम किसका ध्यान करें? उसका कोई रूप नहीं, रंग नहीं, रेख नहीं, भेख नहीं इसलिए गुरु इंसानी चोला धारण करके हमें बताता है कि मैं इस रूप में तुम्हारे अंदर बैठा हूँ, मुझसे मिलें। देह धारण करने का यही मतलब होता है कि वह हमें बताता है जब तुम अंदर जाओगे तुम्हें ऐसे ही नख्श मिलेंगे।

एक बार की बात है कि महाराज जी हमारे नज़दीक के गाँव गणेशगढ़ में एक प्रेमी भगीरथ को 'नाम' देने लगे। जब उसे नाम दिया अभी उसे थोड़ा सा ही समझ आया था कि इतने में उसे ऐसा लगा जैसे उसके जिस्म को आग लग रही है। महाराज जी ने अभी उसे धुन पर नहीं बिठाया था। वह 'नाम' के बीच में से ही उठकर जाना चाहता था।

वह जाते-जाते पूछने लगा कि क्या मुझे सचमुच दर्शन होंगे? मैंने महाराज जी को बताया कि यह आदमी पूछ रहा है कि क्या मुझे सचमुच दर्शन होंगे? महाराज जी ने हँसकर कहा, "मेरे कपड़ो की तरफ देख ले मैंने यही कपड़े पहने होंगे।" वह जल्दी से जाकर बस में बैठ गया, उसके घर का रास्ता एक घंटे का था। घर जाकर उसने अपनी पत्नी से कहा, ''जल्दी से चारपाई बिछा दे मैं जा रहा हूँ, सफेद कपड़ों वाला आ गया है उसने काला कोट पहना हुआ है।''

यह परम पिता कृपाल की महिमा थी। सूरमा गुरु जो कहता है वह करके दिखा देता है। जबकि उसके पास पूरा 'नाम' भी नहीं था लेकिन उसका वक्त आ चुका था। वह आदमी शराब पीता और मीट खाता था। उसने परम पिता कृपाल के चरणों में आकर कहा कि मैं नाक से लकीरें निकालता हूँ कि मैं आज के बाद मीट-शराब खाना-पीना तो दूर इनकी तरफ देखूँगा भी नहीं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब कोई अपनी भूल स्वीकार कर लेता है तो माफी देने वाला माफी दे देता है।''

कित मुख गुर सालाहीऐ गुर करण कारण समरथ।।

गुरु कुलमालिक है जो चाहे कर सकता है, किस मुँह से उसकी महिमा करें? सहजो बाई कहती हैं, ''अगर मैं पूरा सर्वस्व भी गुरु पर वार दूँ तो भी उसकी महिमा ब्यान नहीं कर सकती। चाहे सारे समुद्रों की स्याही बना लूँ! सारी धरती का कागज़ बना लूँ! सारी वनस्पति की कलम बना लूँ! तो भी मैं गुरु की महिमा नहीं लिख सकती। गुरु ने हमारा जन्म-मरण काट देना है, हम तड़पते हुओं को शान्ति देनी है।''

से मत्थे निहचल रहे जिन गुर धारया हत्थ।।

गुरु निहचल होता है, जिसके सिर पर अपना प्यार भरा हाथ रख देता है, अंदर 'नाम' प्रकट कर देता है वह भी निहचल हो जाता है।

गुर परमेसर सेवया भै भंजन दुख लत्थ।।
सतगुर गहर गंभीर है सुख सागर अघ खंड।।
जिन गुर सेवया आपणा जमदूत न लागै डंड।।
गुर नाल तुल न लगई खोज डिट्ठा ब्रहमंड।।
नाम निधान सतगुर दीआ सुख नानक मन मह मंड।।

आपने इस छोटे से शब्द में 'नाम' की महिमा बताई। हमारा शरीर भी यहीं रह जाएगा इस संसार से साथ जाने वाली ताकत सिर्फ 'नाम' है। **गुरु कुलमालिक है** अगर हम उसे अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तो गुरु सारी बरकतें लेकर हमारे अंदर बैठ जाता है। उसे हमारा फिक्र हो जाता है, जब तक हम गुरु को अपने अंदर प्रकट नहीं करते तब तक हम अपना फिक्र करने में लगे हुए हैं।

शुरू-शुरू में बाहर भरोसा बनाना पड़ता है। जब हम थोड़ा-सा अंदर जाते हैं तो हमारा भरोसा अपने आप ही पक्का हो जाता है। हमें पता चलता है कि अंदर प्यार ही प्यार है। हमें चाहिए कि 'शब्द-नाम' की कमाई करें, अपने जीवन को सफल बनाएं।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

सबसे पहले सिमरन किया जाता है, सिमरन के साथ-साथ ध्यान भी किया जाता है। जब ध्यान की गति प्रबल हो जाती है तब स्वाभाविक ही इंसान की रूचि प्रीतम की तरफ हो जाती है; प्रीतम ही प्राण-आधार बन जाता है। फिर साधक प्रीतम को छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहता। ऐसे में दो से एक रूप होने की हालत प्रतीत होने लगती है। ऐसी अवस्था में सेवक अपने आपको भूलने लग जाता है उसे हर जगह अपना प्रीतम प्रत्यक्ष प्रतीत होने लगता है।

जिस हृदय में प्रीतम के लिए सच्चा **प्रेम** है वहाँ प्रीतम के सच्चे दर्शनों का सुख और आनन्द उत्पन्न होता है। **विरह प्रेम** की जागृत अवस्था का नाम है। प्रेमी यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उसका प्रीतम एक क्षण के लिए भी उससे दूर हो! लेकिन जब किसी कारणवश प्रीतम का दर्शन न हो या प्रीतम से बिछोड़ा हो जाए तो दिल में कसक सी उठती है और अंदर दर्द महसूस होता है।

विरह या तड़प इसलिए होती है क्योंकि हमारी आत्मा जो माँगती है इसे अभी उसकी प्राप्ति नहीं हुई। जैसे सारंग को अमृत की बूँद की निरंतर तड़प होती है, चकवे को चाँद के दर्शन न होने पर निराशा होती है, माता को अपने बेटे के बिछोड़े पर बैचेनी होती है, स्त्री को पति के वियोग में बेकरारी होती है, मछली को पानी के बिना अशान्ति होती है। इसी तरह हमारी आत्मा भी उस मालिक की **विरह** में तड़प रही है।

विरह की तड़प बार-बार उछाले मारती है जो प्रीतम की याद को ताजा रखती है, हृदय बार-बार उसकी याद को तस्सवर करके तक्ष को बुझाता है और इसी में सुख महसूस करता है। यह प्रीतम को प्राप्त

करने की सीढ़ी है, जिज्ञासु को इसी सीढ़ी पर चढ़कर जाना पड़ता है। जैसे मेवे के वृक्ष में पहले फूल निकलते हैं जहाँ फूल न निकले वहाँ फल पैदा नहीं हो सकते इसी तरह प्रीतम की प्राप्ति की राह में **विरह** की जरूरत है। अंदर ही अंदर इच्छा उठती है, मालिक को देखे बिना दिल को चैन नहीं आता। जिज्ञासु साधु-सन्तों से मिन्नतें करता है कि मुझे किसी तरह भी मालिक के दर्शन करवाएं।

मैं मेलो सन्त मेरा हर प्रभ सज्जण, मैं मन तन भुख लगाइए जिओ।
हौं रह न सको बिन देखे मेरे प्रीतम, मैं अंतर विरहो हर लाइए जिओ।।

सन्त-महात्माओं के जीवन चरित्रों से उनकी तड़प का पता चलता है। दुनिया खाती-पीती, रंगरलियाँ मनाती हुई रात को खर्राटे मारती है। विरही रूह की आँखों में नींद नहीं, वह प्रीतम के बिछोड़े में रात को रो-रोकर उसके आगे मिन्नते करती है। विरही रूह हौंके ले-लेकर तन से सूखती चली जाती है। उसे खाना-पीना, पहनना और श्रृंगार करना अच्छा नहीं लगता। ऐसी रूह के लिए गुरु नानक साहब कहते हैं:

मुध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नींद न आवै।
सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै।
धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए।
सीगार मिठ रस भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए।

गुरु नानकदेव जी अपनी विरह का जिक्र करते हैं कि मेरी हालत देखकर वैद्य को बुलाया गया। वैद्य नब्ज ढूंढ़ता है उसे कुछ समझ नहीं आता; समझ आए भी कैसे? क्योंकि दर्द तो कलेजे में उठ रहा है।

वैद्य बुलाया वैद्यगी पकड़ ढिढोलें बाँह, भोला वैद्य न जाने कर्क कलेजे माँह।

हे मालिक! मुझे तेरे बिछोड़े में रोते हुए देखकर सारी दुनिया, वृक्ष और पक्षी भी रो उठे लेकिन मेरा मन नहीं रोया उसे जरा भी तरस नहीं आया जिस कारण मैं तुझसे बिछुड़ी रही।

मैं रोंवदी सब जग रुन्ना रुनणे वन पखेरू।
इक न रुन्ना मेरे तन का विरहा जिन्हों पिरो बिछोड़ी।

गुरु अमरदास जी भी साधक की रोती-बिलखती रूह का उसी तरह वर्णन करते हैं:

पिर बिन खरी निमाणी जिओ बिन पिर क्यों जीवां मेरी माई।
पिर बिन नींद न आवे जिओ कापड़ तन न सुहाई।

गुरु रामदास जी फरमाते हैं, ''मैं अपने प्रीतम के बिना एक पल भी नहीं रह सकता जैसे अमली अमल के बिना मर जाता है। इसी तरह मैं तेरे बिना मर जाता हूँ। हे मालिक! जिन्हें तेरी प्यास है उन्हें तेरे सिवाय कोई अच्छा नहीं लगता।''

मिल मेरे प्रीतमा जिओ तुध बिन खड़ी निमाणी।
मैं नैंणी नींद न आवे जिओ भावे अन्न न पाणी।
पाणी अन्न न भावे भरिए हावे पिर बिन क्यों सुख पाइए।
गुरु आगे करूं बेनती जे गुरु भावै ज्यों मेले तिवैं मिलाइए।

हम तेरे बिना दुनिया में दुख सह रहे हैं। दशम गुरु गोविंद सिंह जी फरमाते हैं:

मित्र प्यारे नूं हाल मरीदां दा कहना।
तुध बिन रोग रजाईयां दे ओढ़ण नाग निवासा दा रहना।
सूल सुराही खंजर प्याला विंग कसाईयां दे सहना।
यारड़े दा सानूं सथ्थर चंगा भटखेड़या दे रहना।

कबीर साहब परमात्मा के बिछोड़े का जिक्र करते हैं कि दुनिया की रंगरलियाँ मनाते हुए किसी को परमात्मा नहीं मिला। जिसे भी परमात्मा मिला रो-रोकर ही मिला अगर हँसते-हँसते परमात्मा मिल जाए तो कोई दुहागण क्यों हो! सारा संसार अच्छा खाना खाकर आराम से सोता है। दास कबीर रातों को जागता और रोता है:

हँस हँस कन्त न पाया जिन पाया तिन रोए।
हँसी खेडे पिया मिले ते कौन दुहागण होए।
सुखिया सब संसार है खावे और सोवे।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोवे।

परमात्मा को पाने के लिए **विरह** का उपजना जरूरी है इसलिए हँसना-खेलना छोड़कर उसकी याद में रोएं।

कबीर हँसना दूर कर रोने से कर चित्त।
बिन रोए क्यों पाईए प्रेम प्यारा नित्त।

कबीर साहब विरही रूह के बिछोड़े का दर्द बयान करते हैं कि ऐसी रूह मालिक को संदेश देती है जिस तरह मछली जल के बिना तड़पकर मर जाती है क्योंकि वह पानी का जीव है। इसी तरह हे मालिक! मैं तेरे बिना तड़प रही हूँ। **विरह** की आग तन को जला रही है। रूह तन को छोड़कर पिया से जुड़ी हुई है। मौत रूह को ढूंढ-ढूंढकर वापिस चली जाती है क्योंकि मौत को तन में से रूह नहीं मिलती।

हे स्वामी! आप जल्दी आकर मुझसे मिलें नहीं तो मेरे प्राण निकल जाएंगे। मुझे मौत दे दें या अपने दर्शन दें। अब मुझसे आठों पहर का तड़पना नहीं सहा जाता। अब आपकी चाहवान दुनिया से उपराम है। **विरह** में आपसे मिलने की उम्मीद प्राणों का आसरा हैं। बार-बार सिमरन करके आँखें भर आती हैं। रोने से दिल कुछ हल्का हो जाता है। मैंने **विरह** में अपने दोनों नैन कमंडल बना रखे हैं जो दिन-रात आपके दर्शनों की मौजूदगी चाहते हैं। तन का दीया और जीव(आत्मा) की बत्ती बना रखी है जिसमें तेल की जगह खून जलता है।

बिरहा दे संदेशणा सुणो हमारे पीव।
जल बिन मछली क्यों जिए पानी में क्या जीव।
बिरह तेज तन में तपे अंग सभी अकलाए।
घट सुन्ना जित पीव में मौत ढूंढ फिर जाए।
कबीर सुंदरी यों कहे सुनयो कन्त सुजान।
देग मिलो तुम आए कर नहीं तो तजूं प्राण।
आठ पहर का दाजना मोपे सहा न जाए।
बिरह कमंडल कर लिए बैरागी दो नैन।
माँगे दर्शन दूगणी छके रहे दिन रैन।
ऐह तन का दिवला करूं बाती मेलूं जीव।
लौहू सींचू तेल ज्यों कब मुख देखूं पीव।

आप फरमाते हैं, ''हमारे नैन बाँवरे होकर क्षण-क्षण आपकी तलाश कर रहे हैं लेकिन आप मिले नहीं, आपके बिछोड़े में मेरी बहुत बुरी हालत हो रही है। तन का माँस सूख गया है अब पिंजर ही रह गया है कौए इसे खाने की इंतजार में हैं। मेरे मन्द भाग्य हैं कि अभी तक आप मिले नहीं।'' **विरह** माँस और हड्डियों को खा जाता है। शेख फरीद साहब कोयल से पूछते हैं, ''हे कोयल! तू काली क्यों है?'' फिर खुद ही जवाब देते हैं कि वह प्रीतम की **विरह** में जल-जलकर काली हो गई है।

काली कोयल तू कित गुण काली।
अपने प्रीतम को क्यों है विरह जाली।

विरह ने जबरदस्त फौज बनाकर मुझे घेर लिया है; न मरने देता है न जीने देता है। तड़प-तड़पकर जान जा रही है। पिया के बिना जी तरस रहा है। पल-पल विरह सता रही है मुझे रात-दिन चैन नहीं। सिसक-सिसककर दम जा रहा है। कबीर साहब कहते हैं:

नैन हमारे बाँवरे छिन छिन लोड़े तुझ।
ना तुम मिलो ना मैं सुखी ऐसी बेदन मुझ।
माँस गया पिंजर रहया ताकन लागे काग।
साहेब अजो न आया कोई मन्द हमारा भाग।
बिरह सेती मत अड़े मन मोर सुजान।
हाड़ माँस सब खात है जीवन करे मसान।
बिरह प्रबल दर साज के घेर दिओ मोहे आए।
नेह मारे छाडे नहीं तड़प तड़प जी जाए।
पिया बिन जी तरसत रहे पल पल विरह सताए।
रैन दिवस मोहे चैन नहीं सिसक सिसक दम जाए।

ये हार-श्रृंगार, आन-बान और सजावट जब तक प्रीतम की भेंट नहीं चढ़ते सब व्यर्थ हैं। जब प्रीतम **प्रेम** भरी नजर से देखे तभी ये सफल हैं नहीं तो इन्हें उतारकर आग लगा देनी चाहिए। सुहाग की चूड़ियाँ पलंग के साथ मारकर तोड़ देनी चाहिए अगर प्रीतम के साथ मिलाप नहीं हुआ तो ये चूड़ियाँ किस काम की हैं?

चूड़ी पटकूं पलंग स्यों चोली लाऊं आग।
जेह कारण यह तन खड़ा ना सुत्ती गल लाग।

इस **प्रेम** में सुहागन रूह दुनिया को भूल जाती है। उसे एक पल के लिए भी प्रीतम से दूर होना दूभर मालूम होता है। हीर को खेड़ो के महल में आराम करना भट की तरह मालूम होता है लेकिन अपने दिल के मालिक का सत्थर और घास-फूँस की झोपड़ी स्वर्ग की तरह महसूस होती है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

यारड़े दा सानूं सत्थर चंगा भटखेड़या दा रहना।

प्रेमी रूह प्रीतम के बिना रेशमी लिबास आग में फूँक सकती है अगर प्रीतम साथ हो तो वह मिट्टी में लिबड़ने में भी शोभा समझती है।

धनी बिहोना पाट पटम्बर भाई सेती जाले।
धूणी विच लूणन्दणी सोहां नानक तेह शों नाले।

गुरु साहब इसी ख्याल को प्रकट करते हैं अगर तू प्रीतम से दूर है! अपना चूड़ा और बाँहें पलंग के साथ मारकर तोड़ दे। प्रीतम के बिना ये सब हार-श्रृंगार किस काम के हैं?

चूड़ा भन्न पलंग स्यों मूंदे संण बाहीं संण बाँहा।
ऐते वेश करेन्दिए मूंदे सोरा तूं अवराहां।
ना मनी यार ना चूड़ियां ना से वंग्णिहां।
जो से कंठ ना लगियां जलन से बाहंणियां।

प्रेमी की हमेशा यही अभिलाषा होती है कि वह प्रीतम के देश जाए। कबीर साहब फरमाते हैं, ''अब मेरा दिल खिंचा जा रहा है। अब मुझे यह नगरी अच्छी नहीं लगती। मैं चाहता हूँ कि जल्दी यहाँ से उड़कर प्रीतम के देश जा पहुँचू। वह नगरी अति सुंदर है वहाँ कोई आता-जाता नहीं। वहाँ चाँद-सूरज और पवन-पानी नहीं। कोई साईं को जाकर मेरे इस दर्द भरे संदेश को सुनाए।''

नगरवा हमें ना भावे साईं की नगरी अति सुंदर।
जहाँ कोई आवे ना जावे चाँद सूरज पवन ना पाणी।
कोई संदेश पहुँचावे दर्द यह साईं को सुनावे।

कबीर साहब फरमाते हैं कि **विरह** की पीड़ा पुरानी है यह हड्डियों में समा जाती है। **प्रेम** की पीड़ा कलेजे तक को खा रही है। विरह की चोट सताती है तो सारा तन जख्मी हो जाता है। इस पीड़ा को सहने वाला ही जानता है कि विरह नागिन ने हमें अपने बस में करके हमारा कलेजा जख्मी कर दिया है। बिरहन अंग नहीं मोड़ती वह कहती है जो इच्छा है खा ले। दिन इंतजार में गुजरता है और रात को भी आँखें इंतजार में ही लगी रहती हैं। पिया से न मिलने के कारण बिरहन अति व्याकुल है। वह दिन कैसा होगा जब गुरुदेव बाँह पकड़कर अपने चरण कमलों की छाया में अपने पास बिठा लेंगे।

पीर पुरानी बिरह की पिंजर पीर ना जाए।
एक पीर है प्रीत की रही कलेजे छाए।
चोट सताए बिरह की सब तन जाजर होए।
मारन हारा जाण ही कह जिस लागी सोए।
बिरह भुयंगम बस नहीं किया कलेजे घाव।
बिरहन अंग ना मोड़ती ज्यों भावे त्यों खाव।
देखत देखत दिन गया निश भी देखत जाए।
बिरहन पी पावे नहीं केह बेकल जीओ घबराए।
सो दिन कैसा होएगा गुरु गहेंगे बाँह।
अपना कर बैठावी चरण कमल की छाँह।

फरीद साहब मालिक के बिछोड़े के दुःख को दर्दनाक लफ्जों में बयान करते हैं कि मालिक की सोच-फिक्र में तन सूखकर पिंजर हो चुका है। अब कौए चोंच मार-मारकर माँस खाने लगे हैं। आप कहते हैं, ''ऐ कौवो! ये नैन मालिक की इंतजार में लाचार हैं, इन्हें मत छेड़ना। मन्द भाग्य की वजह से मुझे अभी दर्शन नहीं हुए लेकिन मुझे अभी उसके मिलने की आशा है। जिस दिन दाई ने मेरा नाला काटा था अच्छा होता! वह मेरा गला ही काट देती तो मुझे इतने दुःख न सहने पड़ते।''

फरीदा तन सुखा पिंजर थिआ तलियाँ घूंडे काग।
अजे सो रब ना बोड़ियो देख बंदे के भाग।
कागा करण ढ़िढ़ोलया सगला खाया माँस।

ऐह दो नैना मतशयोह पिर देखन की आस।
फरीदा जेह दिन नाला कपया जेह गल कप्पे चुख।
पवा ना एती मामले साह ना ऐती दुख।

महात्मा चरनदास जी इस दृश्य का वर्णन इस तरह करते हैंः

गदगद बाणी कंठ में आँसु टपके नैन।
वो तो बिरहन सिसकती तड़पत है दिन रैन।
हाय-हाय हरि कब मिले छाती फाटी जाए।
ऐसा दिन कब होएगा दर्शन करूं अघाए।

मीराबाई जी ने अपना **विरह** का हाल इस तरह बयान किया हैः

ना तो नाम को जी मौसू तनक ना तोड़ो जाए।
पाना जे पीली पड़ी रह लोक कहे पंड रोग।
छांड़े लांगण मैं कहा रे राम मिलण के जोग।
बाबल वैद्य बुलाया है पकड़ दिखाई म्हारी बाँह।
मूर्ख वैद्य मरण ना जाणे कर्क कलेजे माँह।
जां वैद्या घर आपणे रे म्हारो नाम ना ले।
मैं तो दाजी बिरह की रे तू काहे को दारू दे।
राह रहे पाती पीपहणा रे पिव को नाम ना ले।
जे कोई बिरहन नू साँभले तो पिव कारण जिव दे।
खिन मंदर खिन आंगणे रे खिन खिन ठाणी होवे।
घायल जो घूमो खड़ी म्हारी बिथा ना बूझे कोए।
काड़ कलेजो मैं धरूं रे कागा तू ले जाहे।
जेह देसा म्हारो पिव बसे रे वह देखे तू खाए।
म्हारे ना तो नाम को रे और न नातो कोए।
मीरा व्याकुल बिरहणी रे हरि दर्शन दीजो मोहे।
चित्त चढ़ी मेरे माधरु मूरत पुर विच आन अड़ी।
कब की थाड़ी पंथ निहारूं अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण पिया बिन राखूं जीवन मूल जड़ी।
मीरा गिरधर हाथ विखाई लोग कहें बिगड़ी।
बिरह बिथा कास कहूं सजनी बह भी करबट नैन।
मीरा के प्रभ कबहे मिलेगे दुख मेटत सुख बैन।

.....शेष अगले अंक में